



नए नियम के भविष्यद्वक्ता



"वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है; 5 और सेवा भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है; 6 और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।" (1 कुरिन्थियों 12:4-6)

मलाकी के समय से लेकर 400 वर्ष बीत गए, जब तक कि परमेश्वर के लोगों के बीच किसी भविष्यद्वक्ता की आवाज़ नहीं सुनी गई। इस मौन के कारण, इस्राएल के लोगों ने पवित्रशास्त्र के संग्रह (अर्थात् उन पुस्तकों का संग्रह जो पुराने नियम को बनाती हैं) को पूरा और बंद मान लिया।

हालाँकि, परमेश्वर अधिक समय तक मौन नहीं रहा। उचित समय आने पर, उसने एक नए भविष्यद्वक्ता को भेजा: यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला (मत्ती 11:7-9)। उस समय से भविष्यद्वक्ता फिर से प्रकट होने लगे। अन्य कार्यों के साथ-साथ, वे नए नियम को लिखने के लिए भी उत्तरदायी थे।

इन नए भविष्यद्वक्ताओं और भविष्यद्वक्तिनियों की क्या भूमिकाएँ थीं? वे कौन थे? क्या पुराने नियम के समय की तरह झूठे भविष्यद्वक्ता भी थे?



नए नियम में भविष्यद्वक्ताओं की भूमिकाएँ



नए नियम के भविष्यद्वक्ता:



यीशु, प्रतिज्ञात भविष्यद्वक्ता



प्रेरित और भविष्यद्वक्ता



भविष्यद्वक्तिनियाँ



पौलुस के सहकर्मी



झूठे भविष्यद्वक्ता

नए नियम में भविष्यद्वक्ताओं की भूमिकाएँ

“परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति और उपदेश और शान्ति की बातें कहता है।” (1 कुरिन्थियों 14:3)

नए नियम में भविष्यवाणी को पवित्र आत्मा के एक वरदान के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो बहुतायत से उंडेला गया था (रोमियों 12:6)। एक ही कलीसिया में इतने अधिक भविष्यद्वक्ता हो सकते थे कि उन्हें बोलने के लिए बारी-बारी से बोलना पड़ता था (1 कुरिन्थियों 14:29-31)।

इन भविष्यद्वक्ताओं ने कौन-कौन सी भूमिकाएँ निभाईं? (प्रकाशितवाक्य 19:10; 1:1; इफिसियों 4:11-12; 1 कुरिन्थियों 14:3; प्रेरितों के काम 15:32)।

उनका मुख्य कार्य लोगों को यीशु के पास ले जाना था

यीशु की गवाही देना



उन्होंने उन घटनाओं को प्रकट किया जो वर्तमान समय तक फैली हुई थीं

भविष्य की घोषणा करना



एक ऐसी मजबूत कलीसिया का निर्माण करना जो शत्रु के आक्रमणों का सामना कर सके

आत्मिक उन्नति



पाप को प्रकट करना, ताकि लोग पश्चात्ताप कर सकें

प्रोत्साहन



यहूदा और सीलास को इसी विशेष उद्देश्य के लिए कलीसियाओं के पास भेजा गया था।

सांत्वना





नए नियम
के
भविष्यद्वक्ता

यीशु, प्रतिज्ञात भविष्यद्वक्ता

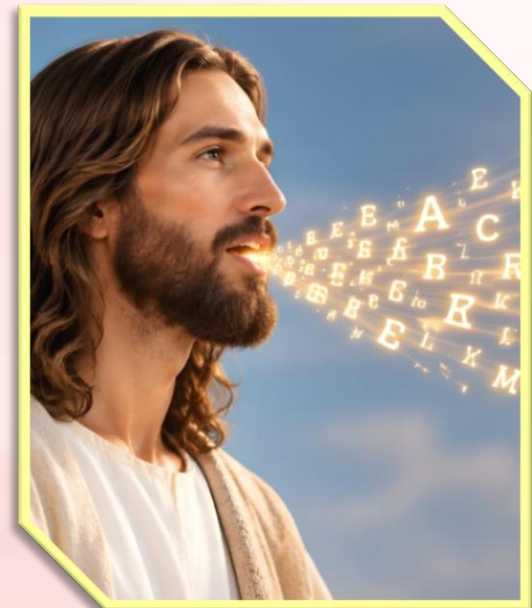
“तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से, अर्थात् तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा; तू उसी की सुनना;”
(व्यवस्थाविवरण 18:15)

यीशु के समकालीन लोग उसे एक भविष्यद्वक्ता मानते थे (मत्ती 21:11; मरकुस 6:15; लूका 7:16; यूहन्ना 6:14)।

उसने स्वयं भी यह उपाधि अपने लिए स्वीकार की (मरकुस 6:4; लूका 13:33)।

पतरस ने स्पष्ट किया कि यीशु वही भविष्यद्वक्ता और मसीहा था, जिसकी घोषणा मूसा और अन्य भविष्यद्वक्ताओं ने की थी (व्यवस्थाविवरण 18:15; प्रेरितों के काम 3:18-26)।

लेकिन यीशु ने परमेश्वर का वचन नहीं लिखा, बल्कि वह स्वयं वचन है (यूहन्ना 1:1)।



वह केवल “अन्धियारे स्थान में प्रकाश देने वाली ज्योति” नहीं है, जैसे अन्य भविष्यद्वक्ता थे, बल्कि वह स्वयं ज्योति है (2 पतरस 1:19; यूहन्ना 1:9; 8:12)।

उसका कार्य किसी भी भविष्यद्वक्ता के कार्य से बढ़कर है। अपने जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के कारण यीशु ही एकमात्र ऐसा है जो हम सभी को अनंत जीवन दे सकता है।



प्रेरित और भविष्यद्वक्ता

“जो अन्य समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है।” (इफिसियों 3:5)

नए नियम के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं में कुछ सामान्य विशेषताएँ थीं:

वे परमेश्वर द्वारा भेजे गए लोग हैं (लूका 11:49)



उन्हें कलीसिया का नेतृत्व करने के लिए वरदान दिए जाते हैं (1 कुरिन्थियों 12:28-29; इफिसियों 4:11-12)



वे कलीसिया की नींव हैं (इफिसियों 2:20)



उन्हें प्रकाशन प्राप्त होते हैं (इफिसियों 3:5)



वे न्याय के कारण आनन्दित होते हैं (प्रकाशितवाक्य 18:20)

जब प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं का एक साथ उल्लेख किया जाता है, तो प्रेरितों का उल्लेख भविष्यद्वक्ताओं से पहले किया जाता है (लूका 11:49 को छोड़कर)। पतरस प्रेरितों की तुलना प्राचीन भविष्यद्वक्ताओं से करता है (2 पतरस 3:2)।

यीशु ने स्वयं प्रेरितों को विशेष रूप से अपने पुनरुत्थान के गवाह होने के लिए नियुक्त किया था (प्रेरितों के काम 10:40-41)।

नए नियम में कई भविष्यद्वक्ताओं का उल्लेख किया गया है, जिनमें से कुछ के नाम भी दिए गए हैं: बरनबास (प्रेरित), शमौन, लूसियुस, मनहेम, शाऊल (प्रेरित), यहूदा, सीलास और अगबुस (प्रेरितों के काम 11:27; 13:1; 15:32; 19:6-7; 21:10)।



भविष्यद्वक्तियाँ

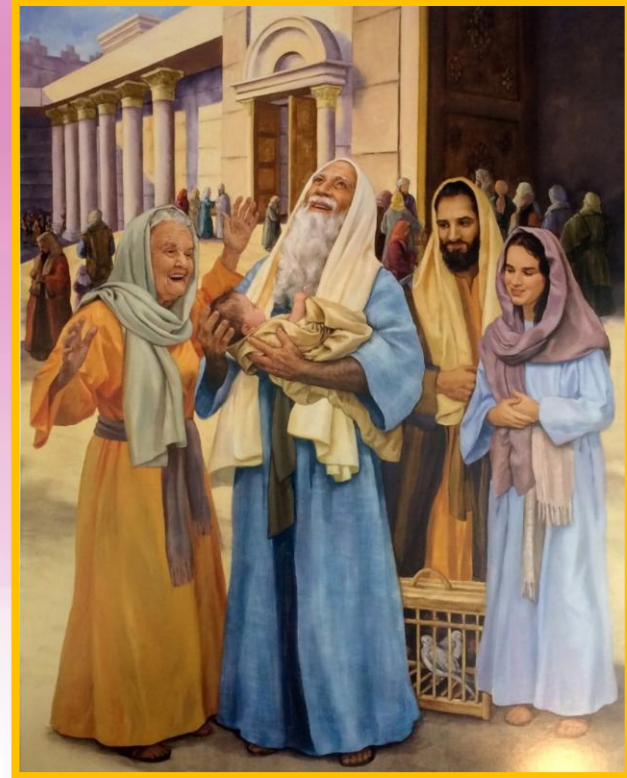
“[फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक] उसकी चार कुँवारी पुत्रियाँ थीं, जो भविष्यद्वाणी करती थीं।” (प्रेरितों के काम 21:9)

नए नियम में नाम से उल्लिखित एकमात्र भविष्यद्वक्तिन हन्नाह है, जिसने “उस बालक [यीशु] के विषय में उन सभी लोगों से बात की, जो यरूशलेम के छुटकारे की बात जोह रहे थे” (लूका 2:36-38)।

सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस की चार बेटियों को भी भविष्यवाणी का वरदान प्राप्त था (प्रेरितों के काम 21:8-9)।

इसके अलावा, भविष्यवाणी का उल्लेख एक सामान्य वरदान के रूप में किया गया है, जो स्त्रियों और पुरुषों दोनों को दिया जाता है (1 कुरिन्थियों 11:4-5)।

योएल ने पहले ही घोषणा कर दी थी कि पवित्र आत्मा इस प्रकार कार्य करेगा कि बेटे-बेटियाँ, बूढ़े-जवान, दास और दासियाँ भविष्यवाणी करेंगे (योएल 2:28-29)।



पौलुस के सहकर्मी

“हे पुत्र तीमुथियुस, उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार जो पहले तेरे विषय में की गई थीं, मैं यह आज्ञा सौंपता हूँ कि तू उनके अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ते रह।”
(1 तीमुथियुस 1:18)

प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं और भविष्यद्वक्तिनियों के अलावा, पौलुस के कुछ सहकर्मियों का भी उल्लेख मिलता है, जिन्होंने सीलास और बरनबास की तरह भविष्यवाणी का वरदान प्राप्त किया था:



ती मु थि यु स



सेवकाई के लिए उसके बुलाए जाने की भविष्यवाणी की गई थी (1 तीमुथियुस 1:18)। उसने पौलुस के साथ मिलकर इन पत्रियों को लिखा: 2 कुरिन्थियों (2 कुरिन्थियों 1:1); फिलिप्पियों (फिलिप्पियों 1:1); कुलुस्सियों (कुलुस्सियों 1:1); 1 थिस्सलुनीकियों (1 थिस्सलुनीकियों 1:1); 2 थिस्सलुनीकियों (2 थिस्सलुनीकियों 1:1); और फिलेमोन (फिलेमोन 1:1)।

ती तु स



उसने भविष्यद्वक्ता के कई कार्य किए, जैसे आत्मिक उन्नति (2 कुरिन्थियों 8:6); प्रोत्साहन (तीतुस 2:6, 9, 15); और सांत्वना (2 कुरिन्थियों 7:13)।

झूठे भविष्यद्वक्ता

"हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो, वरन् आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं।" (1 यूहन्ना 4:1)

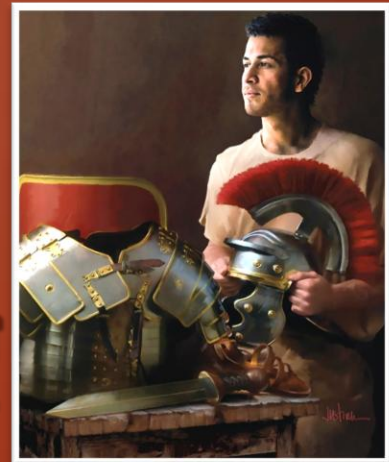
यीशू ने चेतावनी दी कि झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, जिन्हें उसने "फाड़ खाने वाले भेड़िए" कहा (मत्ती 24:24; 7:15)। ये झूठे भविष्यद्वक्ता आरंभिक कलीसिया के भीतर भी दिखाई देने लगे थे (1 यूहन्ना 4:1)।

पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों को चेतावनी दी कि उनके बीच "फाड़ खाने वाले भेड़िए" उठ खड़े होंगे (प्रेरितों के काम 20:29)। उसने कुरिन्थियों को "झूठे प्रेरितों" के अस्तित्व के बारे में भी चेतावनी दी (2 कुरिन्थियों 11:13)।

सच्ची भविष्यवाणी परमेश्वर के वचन के अनुरूप होती है, मसीह की ओर संकेत करती है और कलीसिया की आत्मिक उन्नति करती है, जबकि झूठे भविष्यद्वक्ता फूट डालने वाली शिक्षाओं और अपने स्वार्थ को बढ़ावा देते हैं।

हमें विश्वासियों के रूप में भविष्यद्वक्ताओं की जाँच करने और यह सुनिश्चित करने के लिए बुलाया गया है कि उनके सभी सन्देश पवित्रशास्त्र के अनुरूप और मसीह-केंद्रित हों।

झूठे भविष्यद्वक्ताओं से (और उन दुष्ट शक्तियों से जो उनका मार्गदर्शन करती हैं) हमारी एकमात्र सुरक्षा आत्मिक युद्ध के हथियारों को धारण करना है जो परमेश्वर ने हमारे लिए प्रदान किये हैं (इफिसियों 6:10-18)।



“कुलपिताओं, भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से बातें कीं, और उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया कि वे अपनी शक्ति से या अपने नाम से नहीं बोलते थे। वे चाहते थे कि किसी भी बात का श्रेय उन्हें न दिया जाए और कोई भी उन्हें ऐसी किसी बात का मूल स्रोत न माने, जिसके लिए वे घमण्ड कर सकें। वे परमेश्वर के सम्मान के लिए सजग रहते थे, क्योंकि सारी स्तुति उसी की है। उन्होंने बताया कि उनकी योग्यता और उनके द्वारा दिए गए सन्देश उन्हें परमेश्वर की शक्ति के प्रतिनिधियों के रूप में दिए गए थे। परमेश्वर ही उनका अधिकार और सामर्थ्य था।”

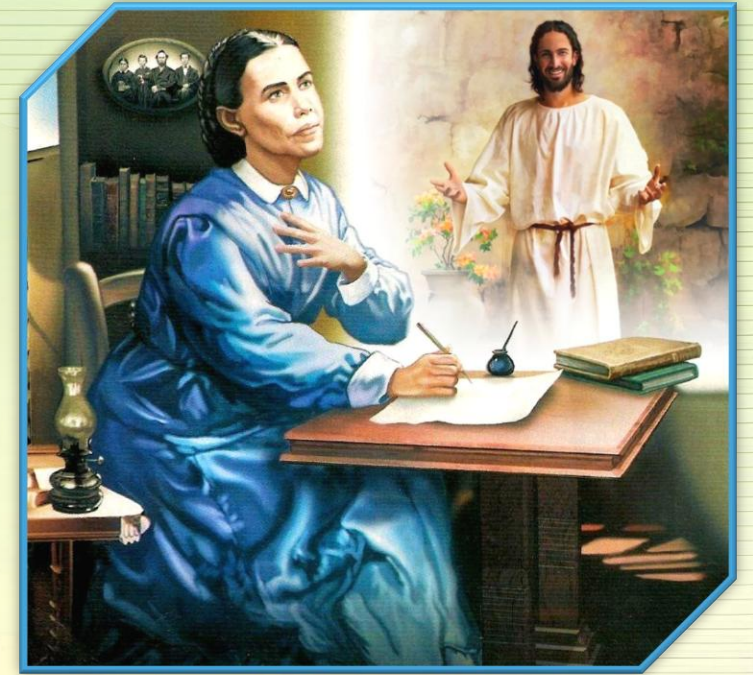
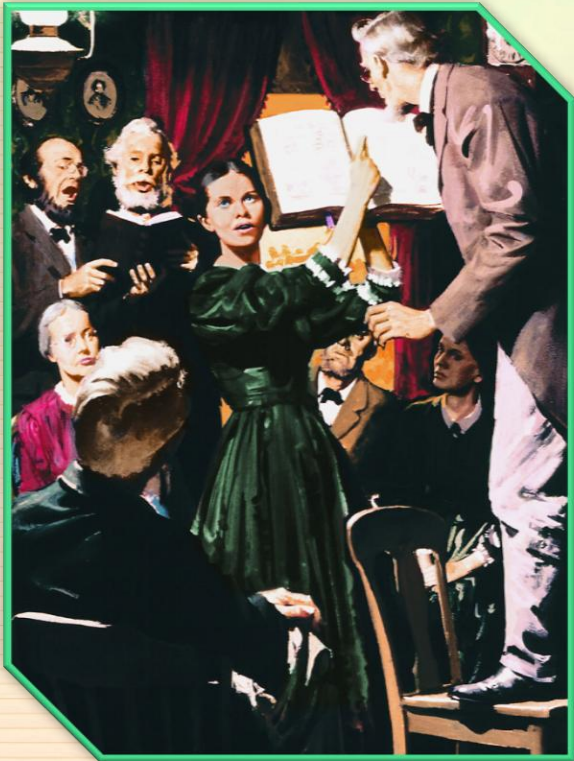
ई जी व्हाइट (यीशु के समान बनना, 30 जुलाई)

परिशिष्ट: एलेन जी. व्हाइट की सेवकाई के मुख्य सिद्धांत

एलेन जी. व्हाइट की सेवकाई के दो मूलभूत केंद्र थे: लोगों को यीशु के पास लाना और उनका ध्यान बाइबल की ओर निर्देशित करना।

पहला केंद्र: यीशु

1888 के अधिवेशन के बाद, जब उनसे चर्चा किए गए विषयों के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने उत्तर दिया: “मैं पिछले 45 वर्षों से तुम्हारे सामने यही प्रस्तुत करती आई हूँ—मसीह का अतुलनीय आकर्षण” (प्रवचन और वार्ताएँ, खंड 1, पृष्ठ 116)।



दूसरा केंद्र: बाइबल

एलेन ने कभी यह दावा नहीं किया कि उनकी रचनाएँ बाइबल से श्रेष्ठ हैं, बल्कि उन्होंने हमेशा आग्रह किया कि उनकी रचनाओं को बाइबल के द्वारा परखा जाए। प्रभु की एक संदेशवाहक के रूप में, वह स्वयं को एक “छोटी ज्योति” मानती थीं, जो लोगों को “बड़ी ज्योति,” अर्थात् बाइबल की ओर मार्गदर्शन करती है (चयनित सन्देश, खंड 3, पृष्ठ 29)।

